

विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उचीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

वनों की प्रतिरोधक क्षमता के लिए प्राकृतिक जलवायु समाधान अपरिहार्य हैं

वन प्रतिरोधक क्षमता का तात्पर्य है कि वन किस हद तक प्राकृतिक आपदाओं, जलवायु परिवर्तन और मानव गतिविधियों के प्रभावों से उबर सकते हैं। यह क्षमता उन वनों को परिभाषित करती है जो संकटों का सामना कर पुनः अपनी पारिस्थितिकीय स्थिति को बनाए रखते हैं। प्रतिरोधक क्षमता का आकलन करने के लिए विभिन्न मानदंडों का उपयोग किया जाता है जैसे जैव विविधता, वनस्पति संरचना और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं। प्रतिरोधक क्षमता वाले उष्णकटिबंधीय वन वे हैं जो प्राकृतिक आपदाओं जैसे तूफान, सूखा, आग आदि के बाद भी तेजी से पुनः स्थिर हो जाते हैं। इसके उदाहरण के रूप में अमेज़न वर्षावन को देखा जा सकता है जो कई दशकों से कई प्रकार के संकटों का सामना करते हुए भी अपने जैव विविधता को बनाए रखने में सक्षम रहे हैं। इन वनों की पहचान करने के लिए वैज्ञानिक प्रतिरोधक क्षमता का उपयोग करते हैं जैसे वनस्पति का घनत्व, प्रजातियों की विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र की कार्यक्षमता।

वन प्रतिरोधक क्षमता का महत्व कई कारणों से है। सबसे पहले, यह वन संरक्षण में सहायक होती है। प्रतिरोधक वनों का संरक्षण करने से अन्य वनों की तुलना में इनकी जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बनाए रखना आसान होता है। वन बहाली में भी यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि प्रतिरोधक वनों को बहाल करने के लिए कम संसाधनों की आवश्यकता होती है और यह तेजी से पुनः स्थिर हो जाते हैं। प्रतिरोधक वनों का महत्व कई पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लिए भी होता है। ये वन जल चक्र को संतुलित रखते हैं, मिट्टी के क्षरण को रोकते हैं और स्थानीय जलवायु को नियंत्रित करते हैं। इसके साथ ही, प्रतिरोधक वनों में फूलों और जीवों की विविधता अधिक होती है, जिससे जैव विविधता को संरक्षित करने में मदद मिलती है। कार्बन अवशोषण में भी प्रतिरोधक वनों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। ये वन अधिक कार्बन को अवशोषित कर वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम करते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार, प्रतिरोधक वनों का संरक्षण और बहाली जलवायु समाधान के रूप में महत्वपूर्ण हैं।

स्थिरता की दृष्टि से भी प्रतिरोधक वन महत्वपूर्ण होते हैं। ये वन न केवल पर्यावरण को संरक्षित करते हैं बल्कि स्थानीय समुदायों की आजीविका को भी समर्थन प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, दक्षिण-पूर्व एशिया के वन स्थानीय समुदायों को खाद्य, जल और औषधीय पौधों की आपूर्ति करते हैं। इसके अलावा, पर्यटन के माध्यम से भी स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के कई तरीके हैं। सबसे पहले, जैव विविधता को बनाए रखना आवश्यक है। विभिन्न प्रजातियों की उपस्थिति वन को विभिन्न संकटों से उबरने में सक्षम बनाती है। दूसरा तरीका है वनस्पति संरचना को बनाए रखना, जिससे वन की स्थिरता बढ़ती है। स्थानीय समुदायों की भागीदारी भी महत्वपूर्ण होती है। ये वन संरक्षण और बहाली में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

वनों और वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बचना एक प्राकृतिक जलवायु समाधान है। ये वन जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने, जैव विविधता को बनाए रखने और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बनाए रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा, ये स्थानीय समुदायों की आजीविका को भी समर्थन प्रदान करते हैं। इसलिए, इन वनों का संरक्षण और बहाली अत्यंत महत्वपूर्ण है। उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों, स्थानीय समुदायों और सरकारों को मिलकर काम करना होगा। वन संरक्षण और बहाली के लिए नीतियों का निर्माण और उनका कार्यान्वयन आवश्यक है। इसके साथ ही, पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता भी महत्वपूर्ण है, जिससे लोग वनों के महत्व को समझ सकें और उनके संरक्षण में भाग ले सकें। इस प्रकार, हम एक स्थायी और संतुलित पर्यावरण की ओर बढ़ सकते हैं, जिसमें वनों का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

वन प्रतिरोधक क्षमता, जिसे पारिस्थितिक प्रतिरोधक क्षमता के रूप में भी समझा जाता है, वन पारिस्थितिक तंत्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। यह वन पारिस्थितिकी तंत्र की उस क्षमता को दर्शाती है जो उसे प्राकृतिक और मानवजनित खतरों से उबरने में सक्षम बनाती है। जैसा कि पहले कहा गया है, इसमें तूफान, सूखा, आग, कीट संक्रमण और जलवायु परिवर्तन शामिल हैं। प्रतिरोधक क्षमता के बिना, वन पारिस्थितिकी तंत्र इन खतरों के सामने अस्थिर हो सकते हैं और अपनी पारिस्थितिकीकार्यक्षमताओं को खो सकते हैं। उदाहरण के लिए, अमेज़न के वर्षावन जो कि विश्व के सबसे बड़े उष्णकटिबंधीय वनों में से एक है,ने कई प्राकृतिक और मानवजनित खतरों का सामना किया है। इसके बावजूद,अपनी जैव विविधता को संरक्षित रखा है और यह इसकी उच्च प्रतिरोधक क्षमता का संकेत है।

कार्बन अवशोषण की दृष्टि से, प्रतिरोधक वन जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये वन अधिक मात्रा में कार्बन को अवशोषित करते हैं और इसे दीर्घकालिक रूप से संग्रहीत करते हैं। यह कार्बन अवशोषण प्रक्रिया वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम करने में मदद करती है, जिससे ग्रीनहाउस गैसों का प्रभाव कम होता है।

तंत्र की स्थिरता और कार्यक्षमता को बनाए रखने में मदद करती है। उदाहरण के लिए, एक अध्ययन ने दिखाया कि उच्च जैव विविधता वाले वन सूखा के प्रभावों से तेजी से उबरते हैं।

प्रतिरोधक वनों का संरक्षण वन पारिस्थितिकी तंत्र के स्थायित्व को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। यह संरक्षण न केवल जैव विविधता को बनाए रखता है बल्कि पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को भी बनाए रखता है जो मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं। वन बहाली के संदर्भ में, प्रतिरोधक वनों को बहाल करने के लिए कम संसाधनों की आवश्यकता होती है और ये तेजी से पुनः स्थिर हो जाते हैं। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जब हम जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने की बात करते हैं। एक उदाहरण के रूप में, मध्य अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में वन बहाली परियोजनाओं ने दिखाया है कि उच्च प्रतिरोधकता वाले वन तेजी से पुनः स्थिर हो जाते हैं और अधिक कार्बन का अवशोषण करते हैं।

कार्बन अवशोषण की दृष्टि से, प्रतिरोधक वन जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये वन अधिक मात्रा में कार्बन को अवशोषित करते हैं और इसे दीर्घकालिक रूप से संग्रहीत करते हैं। यह कार्बन अवशोषण प्रक्रिया वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम करने में मदद करती है, जिससे ग्रीनहाउस गैसों का प्रभाव कम होता है। एक अध्ययन के अनुसार, उष्णकटिबंधीय वनों में कार्बन संग्रहण की क्षमता उच्च होती है, विशेषकर जब वे उच्च जैव विविधता वाले होते हैं। इस प्रकार, प्रतिरोधक वनों का संरक्षण और बहाली जलवायु परिवर्तन को कम करने में एक महत्वपूर्ण रणनीति है।

स्थानीय समुदायों की आजीविका के संदर्भ में भी प्रतिरोधक वनों का महत्व अनदेखा नहीं किया जा सकता है। ये वन स्थानीय समुदायों को खाद्य, जल, और औषधीय पौधों की आपूर्ति करते हैं। उदाहरण के लिए, दक्षिण-पूर्व एशिया के वनों में रहने वाले समुदाय अपनी आजीविका के लिए वनों पर निर्भर होते हैं। इसके अलावा, पर्यटन भी इन वनों से जुड़ा हुआ है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है। प्रतिरोधक वनों का संरक्षण स्थानीय समुदायों को स्थायी आर्थिक लाभ प्रदान कर सकता है।

उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के कई तरीके हैं। सबसे पहले, जैव विविधता को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। विभिन्न प्रजातियों की उपस्थिति वन को विभिन्न संकटों से उबरने में सक्षम बनाती है। दूसरा तरीका है वनस्पति संरचना को बनाए रखना, जिससे वन की स्थिरता बढ़ती है। तीसरा तरीका है स्थानीय समुदायों की भागीदारी को बढ़ावा देना। स्थानीय समुदाय वन संरक्षण और बहाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके लिए शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम चलाना महत्वपूर्ण है ताकि लोग वनों के महत्व को समझ सकें और उनके संरक्षण में सक्रिय भाग ले सकें।

अंत में, उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों, स्थानीय समुदायों और सरकारों को मिलकर काम करना होगा। वन संरक्षण और बहाली के लिए नीतियों का निर्माण और उनका कार्यान्वयन आवश्यक है। इसके साथ ही, पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता भी महत्वपूर्ण है, जिससे लोग वनों के महत्व कोसमझ सकें और उनके संरक्षण में भाग ले सकें। इस प्रकार, हम एक स्थायी और संतुलित पर्यावरण की ओर बढ़ सकते हैं, जिसमें वनों का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

वन प्रतिरोधक क्षमता एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जो वन पारिस्थितिक तंत्र की दीर्घकालिक स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। प्रतिरोधक क्षमता का महत्व न केवल पर्यावरणीय दृष्टिकोण से बल्कि आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी है। जैव विविधता, वनस्पति संरचना और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं प्रतिरोधक क्षमता के मुख्य घटक हैं। उष्णकटिबंधीय वनों का संरक्षण और बहाली जलवायु परिवर्तन को कम करने, जैव विविधता को बनाए रखने और स्थानीय समुदायों की आजीविका को समर्थन प्रदान करने में महत्वपूर्ण हैं। सामूहिक प्रयासों और नीतियों के माध्यम से हम उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकते हैं और एक स्थायी भविष्य की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

वन प्रतिरोधक क्षमता उष्णकटिबंधीय वन पारिस्थितिक तंत्र में विनाशकारी परिवर्तनों से बचाव कर सकती है। परिवर्तन सामान्य है, लेकिन यह अचानक और कठोर विपरीत स्थिति में परिवर्तित हो सकता है। हालांकि विभिन्न घटनाओं ऐसे परिवर्तनों को उत्प्रेरित कर सकती है, अध्ययन बताते हैं कि प्रतिरोधक क्षमता की हानि आमतौर पर वैकल्पिक स्थिति की ओर ले जाती है। इसका मतलब है कि ऐसे पारिस्थितिक तंत्रों के सतत प्रबंधन की रणनीतियों को प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने पर केंद्रित होना चाहिए। प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देना न केवल पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता और जैव विविधता को बनाए रखेगा, बल्कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और स्थानीय समुदायों की आजीविका को सुरक्षित रखने में भी मदद करेगा।

—**अतिथि सम्पादक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय (भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंगप्रोफेसर)**
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

संपादकीय

यूएपीए मास्टरमाइंड को जेल और प्यादे को ज़मानत



सूर्य प्रतापसिंह राजावत

हाल ही में 2020 के दिल्ली दंगों से जुड़ा एक बड़ा साज़िश का मामला, जिसमें 54 लोगों की जान चली गई थी, दो आरोपियों उमर ख़ालिद और शरजील इमाम को ज़मानत न मिलने के कारण काफी चर्चा में है, जिन पर गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए 1967), आइपीसी और अन्य कानूनों के तहत चार्जशीट दायर की गई है। यह बात शायद सोशल मीडिया पर किसी का ध्यान नहीं गया होगा, लेकिन वरिष्ठवकील दुम्यंत दवे, रिटायर्ड जस्टिस मदन बी लोकुर और रिटायर्ड जस्टिस सुधांशु धूलिया के एक पैनल ने, जिसके मॉडरेटर वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल थे, इस पर चर्चा की। ये सभी सुप्रीम कोर्ट से जुड़े हैं। कपिल सिब्बल ने इस पैनल चर्चा को वायरल किया, जो कई सवाल और आरोप उठाती है, क्योंकि इस बहस को इस तरह की बातों से नुकसान पहुंचाया गया कि अगर कपिल सिब्बल अपने क्लाइंट के लिए ज़मानत नहीं दिलवा पाते हैं, तो बेंच अच्छी नहीं है। पैनल में है कहने की हिम्मत थी कि जस्टिस अरविंद कुमार और जस्टिस एन बी अंजारिया वाली इस बेंच को इतने महत्वपूर्ण मामले को नहीं देखना चाहिए था। चर्चा यह थी कि भारत के मुख्य न्यायाधीश को भविष्य में इस पहलु पर ध्यान देना चाहिए। पैनल

में ईमानदार चर्चा की कमी थी। अगर सिब्बल ने प्रॉक्सियशन के वकील को बुलाया होता तो स्वस्थ कानूनी विचार–विमर्श भारत के सभी लोगों के लिए बहुत फायदेमंद हो सकता था। पैनल चर्चा से ऐसा लगता है कि ऐसे नए दर्शकों को, जिन्हें अपराधिक न्यायशास्त्र का कानूनी ज्ञान नहीं है, यह बताया और मनवाया जा रहा है कि न्यायपालिका पतन की स्थिति में है। यह वीडियो कोर्ट को डराने और उसकी अवमानना के सभी तत्वों को पूरा करता है। सुप्रीम कोर्ट की मीडिया ट्रायल के बदलों को हटाने के लिए फैसले के कानूनी रीडिंग और बर्दस व्यू ज़रूरी है। न्यायपालिका संस्था में भारत के लोगों का विश्वास जगाने के लिए कानूनी विरादी का यह कर्तव्य है कि वे फैसले की मुख्य बातों को सामने लाएं। फैसला साफ तौर पर लॉजिकल हॉइडस के साथ लिखा गया है। मौजूदा चर्चा के लिए मुख्य चार बिंदुओं पर चर्चा की जाएगी।

1. लंबे समय तक जेल और अनुच्छेद 21 के तहत संवैधानिक दलील – एन के नजीब, गुर्विंद सिंह, दयानिधि मायमोनी के मामलों में रेशियो डेसीडेंडी की सराहना करते हुए, कोर्ट ने कहा कि अनुच्छेद 21 को उन मामलों में खालीपन में नहीं समझा जा सकता जहां आरोप यूएपीए जैसे विशेष कानून के तहत राष्ट्रीय सुरक्षा और अखंडता से संबंधित है। फैसले में कहा गया है कि सेक्शन 207 सीआरपीसी के तहत पालन के चरण में, कुछ आरोपियों ने कॉपी लेने से इनकार कर दिया और प्री–चार्ज चरण में देरी में है योगदान दिया। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में जमानत के लिए सिर्फ देरी के तर्क को स्वीकार करने से इनकार कर दिया क्योंकि व्यक्तिगत अधिकार को सामूहिक सुरक्षा के साथ संतुलित किया जाना है। इसलिए लंबे समय तक जेल में रखने के पैरामीटर

अनुच्छेद 21 के तहत संवैधानिक दलील – एन के नजीब, गुर्विंद सिंह, दयानिधि मायमोनी के मामलों में रेशियो डेसीडेंडी की सराहना करते हुए, कोर्ट ने कहा कि अनुच्छेद 21 को उन मामलों में खालीपन में नहीं समझा जा सकता जहां आरोप यूएपीए जैसे विशेष कानून के तहत राष्ट्रीय सुरक्षा और अखंडता से संबंधित है। फैसले में कहा गया है कि सेक्शन 207 सीआरपीसी के तहत पालन के चरण में, कुछ आरोपियों ने कॉपी लेने से इनकार कर दिया और प्री–चार्ज चरण में देरी में है योगदान दिया। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में जमानत के लिए सिर्फ देरी के तर्क को स्वीकार करने से इनकार कर दिया क्योंकि व्यक्तिगत अधिकार को सामूहिक सुरक्षा के साथ संतुलित किया जाना है। इसलिए लंबे समय तक जेल में रखने के पैरामीटर

खाली सीटें और खोखली व्यवस्था

पहलु कट–ऑफ़ पर्सैटाइल में की गई भारी कटौती है। सीटों को भरने की हताशा में नियामक संस्थाओं ने पात्रता के मानकों को इतना नीचे गिरा दिया है कि अब शून्य या उसके निकट अंक पाने वाले भी विशेषज्ञता की दौड़ में शामिल हो रहे हैं।

पर्सैटाइल कम करना इस बात का स्वीकार है कि व्यवस्था अब योग्य डॉक्टर बनाने के लिए कम सीटों पर भरने और राजस्व बचाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। जब प्रवेश का मापदंड योग्यता के बजाय केवल सीट भरने की औपचारिकता रह जाता है, तो चिकित्सा जैसे सेवेन्द्रशील पेशे की बौद्धिक और नैतिक नींव हिल जाती है। यह उन मेधावी छात्रों के साथ भी अन्याय है जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की तलाश में हैं। पिछले दशक में मेडिकल कॉलेजों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई है। कागजों पर यह बड़ी उपलब्धि है, लेकिन भरातल पर सच्चाई इसके विपरीत है। चिकित्सा शिक्षा का आधार क्लिनिकल एक्सपोज़र (मरीजों के साथ अनुभव) है। आज कई कॉलेजों में शानदार इमारतें तो हैं, पर वार्ड खाली

■ मेडिकल शिक्षा का बदलता यथार्थ

है। छात्र समझ चुके हैं कि डिग्री भले ही पैसे या कम पर्सैटाइल से मिल जाए, पर पेशेवर विश्वसनीयता केवल मरीजों के बीच रहकर ही अर्जित होती है।

एनाटॉमी, फिज़ियोलॉजी और बायोकेमिस्ट्री जैसे आधारभूत विषयों में सीटें खाली पड़ी हैं। इन क्षेत्रों में करियर के सीमित अवसर और कम सामाजिक सम्मान ने इन्हें प्राथमिकता सूची से बाहर कर दिया है। मानकों में ढील देकर सेवानिवृत्त शिक्षकों की पुनर्नियुक्ति ने इस क्षेत्र में शिक्षण–प्रशिक्षण की जीवंतता को समाप्त कर दिया है।

निजी मेडिकल कॉलेजों में घोस्ट फैकल्टी (कागजी शिक्षक) और निरीक्षण के समय खड़े किए गए नकली मरीज एक खुला रहस्य हैं। नेशनल मेडिकल कमीशन के प्रयासों के बावजूद, यह भ्रष्टाचार शिक्षा की गुणवत्ता को खानापूर्ति तक सीमित कर रहा है। जब छात्र प्रवेश करते हैं कि उनके शिक्षक ही वहां स्थायी नहीं हैं, तो उनका मोहभंग होना स्वाभाविक है।

अंधकार में भी प्रकाश की यह किरण

विद्यार्थी आकाश में बने इन्द्रधनुष को देख अचरज से अचंभित हो कह रहे थे कि कितना बड़ा इन्द्रधनुष!

अवध नाम के भवन के बाहर हरी–भरी वाटिका के पास खड़े यह विद्यार्थी मुझे बेहद जिज्ञासु और उत्सुक जान पड़े। आम, नीम, जामुन, मोलश्री और अनेक लताओं से आच्छादित यह वाटिका भवन मुझे बेहद दिव्य और अनुपम जान पड़े। मेरे कदम स्वतः स्फूर्त उधर ही बढ़ चले। शंका और संकोच से जब मैंने अंदर झांका तो अवाक रह पड़ा। मानो हम भारत के लोग विश्व का पालन–पोषण और संरक्षण करने वाली एक महारक्षिण के रूप में स्थापित होकर समस्त भू–मंडल एवं ब्रह्माण्ड को शांति, समृद्धि, समरता और परस्पर पूरकता से भर रहे हों। वहाँ बहुत ही अनुशासित उन जैसे 15–20 विद्यार्थी अपने–अपने अध्ययन–ध्यान में

इतने निमग्न थे कि मुझे लगा जैसे मैं महर्षि जाबाली के आश्रम में पहुँच गई हूँ, क्योंकि किसी भी देश का संपूर्ण भविष्य उसके प्रबुद्ध वर्ग पर निर्भर होता है और यही वर्ग ईमानदार, कर्मठ, स्वतंत्र और निष्पक्ष है तो उस पर भरोसा किया जा सकता है कि वह सही समय पर देश को उचित नेतृत्व प्रदान करेगा।

इसी अभिरूचि से, त्याग से, तत्परता से, कर्मठता से युवा वर्ग जब देश के दमित और द्रिष्ट वर्ग की बाँह पकड़ अपने बाहुबल का सहारा देकर उठ खड़े होने का संबल देते तो सहजता, समानता स्वीर्णम हो उठेगी। ऐसा लगा जैसे अप्सरातनु ने रेथेंस के निकट अपने इशान शास्त्र के स्कूल की स्थापना की हो तथा जिसका नाम ऐकडेडेमिकी हो रहा हो। ये विद्यार्थी वह प्रतियोगी परीक्षार्थी थे जो अपने–अपने गाँव छोड़कर महानगर में परीक्षा की

और समन्वित प्रयास का परिणाम प्राप्त करते हैं, जैसा कि धारा 18 सवित्रा, सत्रास, उक्तसाने, सलाह देने, भड़काने और आतंकवादी कृत्य को जानबूझकर सुविधाजनक बनाने, साथ ही इसे करने की तैयारी के कृत्यों को दंडनीय बनाती है। इस प्रकार वैधानिक योजना यह मानती है कि आतंकवादी गतिविधि में एक सामान्य गैरकानूनी उद्देश्य की ओर अलग–अलग भूमिकाएँ निधाने वाले कई लोग शामिल हो सकते हैं।

4. मुख्य सवित्राकर्ताओं और दूसरों के साथ व्यक्तिगत भूमिका और व्यवहार में अंतर – फैसले में चर्चा की गई है कि सवित्रा का कानून बताता है कि कैसे कई व्यक्ति, अलग–अलग स्तरों पर और अलग–अलग समय पर काम करते हुए, एक सामान्य योजना से बंधे हो सकते हैं। यह सिद्धांत दायित्व के प्रश्न का उत्तर देता है। यह अपने आप में इस अलग प्रश्न का उत्तर नहीं देता है कि प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता को अपराध साबित होने से पहले कितने समय तक और किस आधार पर प्रतिबंधित किया जा सकता है। इसलिए, जमानत का फैसला अनिवार्य रूप से एक अलग स्तर पर होता है। इसके लिए अदालत को यह देखना होता है कि प्रत्येक आरोपी पर क्या आरोप लगाए गए हैं, वह आरोप वैधानिक तत्वों में कैसे फिट बैठता है, और क्या उस स्तर पर निरंतर हिरासत कानून द्वारा मान्यता प्राप्त वैध उद्देश्य को पूरा करती है। यह अभ्यास सवित्रा के अभियोजन मामले को खत्म नहीं करता है। यह केवल यह सुनिश्चित करता है कि मुकदमे से पहले की हिरासत मनमाना या स्वकालित न हो, और वैधानिक प्रतिबंध तर्क, अनुपात और व्यक्तिगत आरोप के प्रति निष्ठा के साथ संचालित हों।

फैसले में इस बात पर भी जोर दिया गया है कि यह अच्छी तरह से मान्यता

का मार्ग इस खोखली होती व्यवस्था को बचाने पर निर्भरता कम कर युवा ऊर्जा जैसे सुधारों की आवश्यकता है:

सीटें भरने के लिए पर्सैटाइल को न्यूनतम स्तर पर ले जाने की प्रवृत्ति को रोकना होगा। पात्रता के मानक ऊँचे होने चाहिए ताकि विशेषज्ञ डॉक्टरों की गुणवत्ता से कोई समझौता न हो। यदि सीटें खाली रहती हैं, तो यह व्यवस्था के लिए आत्मचिंतन का विषय होना चाहिए, न कि मानकों को गिराने का बहाना। नेशनल मेडिकल काउंसिल को मान्यता का आधार केवल इंफ्रास्ट्रक्चर को नहीं, बल्कि एक्चुअल वेड ऑक्स्पेसी और लाइव सर्जरी डेटा को बनाया चाहिए। डिजिटल मॉनिटरिंग और बायोमेट्रिक उपस्थिति को बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के लागू करना चाहिए। इन विषयों को आकर्षक बनाने के लिए विशेष रिसर्च ग्रांट और उच्च वेतनमान देना होगा। विशेषज्ञों को फार्मस्युटिकल रिसर्च और पब्लिक हेल्थ पॉलिसी में प्राथमिकता देकर उनके करियर के दायरे को विस्तार देना होगा। युवा डॉक्टरों की शिक्षण की ओर

अंधकार में भी प्रकाश की यह किरण

तैयारी के लिए आये थे। इनका इतना दत्तचित होकर अध्ययन, मनन–चिंतन देखकर कोई भी अपभूत हो जाएगा। ये विद्यार्थी ना केवल अपभूत परीक्षा की तैयारी कर रहे थे वरन दलित–दमित कचरा बीनने वाले बच्चों को कुछ समय देकर आक्षर जान, गिनती–पढ़ाई, अंग्रेजी भी सिखा रहे थे, साथ ही स्वच्छता का पाठ भी पढ़ा रहे थे। यही मानवता का आधार है। मानवता को अंधकार में भी प्रकाश की जो यह किरण प्राप्त हुई है उससे निश्चित ही एक दिन भारत सहित समस्त भू–मंडल आलोकित होगा। यह दायित्व बोध जाग्रत होना सामान्य–सी दिखाई देने वाली एक असाधारण

ईश्वरीय घटना है, यही हमारी सुख की अनुभूति करने का बीज मंत्र है। हम पुनः अपने भावेलोक सृष्टि को सुखद, समरस न्याय परायण और समृद्ध बनाने में सफल हो सकें यही निहित का निर्देश है और इसी में राइ और विश्व का मंगलमय भविष्य निहित है क्योंकि व्यक्तिगत विजय सार्वजनिक विजय से पहले आती है, अतः आत्मन्यंत्रण और आत्म अशुशाना ही अच्छे संबंधों की आधारशिला है।

यह असाधारण अनुभव मेरे लिए मानो स्याई हो गया। यही मानवता के लिए जीने–मरने और कुछ कर गुजरने का श्रेष्ठतम ढंग है। यह कहना संस्था तर्क सम्मत है कि अब भारत के राम ने भारत की कमान संभाल ली है।

—**अभिरुचि शर्मा, स्वतंत्र लेखिका**

मेघ	सिंह	धनु
		
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। दिन के मध्याह्न पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लेंगे।	अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।	घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।
वृष	कन्या	मकर
		
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में गति होगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।	परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। दिन के मध्याह्न पश्चात चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है।	परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।
मिथुन	तुला	कुंभ
		
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अवसरें दूर होने लेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। दिन के मध्याह्न अलगा हुआ धन प्राप्त होगा।	महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटकें हुए कार्य बनने लेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में मार्गलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।	आर्थिक कारणों से अटकें हुए कार्य बनने लेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यक्तिगत/पारिवारिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है।
कर्क	वृश्चिक	मीन
		
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटकें हुए कार्य बनने लेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लेंगे। व्यावसायिक कार्य पेशेव्रता/सुगमता से बनने लेंगे।	परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। परिवार में मार्गलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।	मनः स्थिति ठीक रहेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लेंगे। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेंगी।

आकर्षित करने के लिए बेहतर कार्य वातावरण देना होगा। सेवानिवृत्त शिक्षकों पर निर्भरता कम कर युवा ऊर्जा को प्राथमिकता देनी होगी। निजी कॉलेजों में शिक्षा के बाजारीकरण और छिपे हुए खर्चों को रोकना होगा। एक पारदर्शी और किफायती फीस ढाँचा (2020 के अनुरूप) सुनिश्चित करना होगा ताकि मेधावी छात्र केवल आर्थिक कारणों से अच्छी सीटों से वंचित न रहें।

निष्कर्ष—खाली सीटें और गिरता पर्सैटाइल इस बात का प्रमाण है कि भारतीय मेडिकल छात्र अब डिग्री की भीड़ का हिस्सा बनने के बजाय दक्षता को चुन रहा है। यह व्यवस्था के लिए अंतिम चेतावनी है। यह हमने मेडिकल कॉलेजों को केवल डिग्री बांटने वाली फैक्ट्रियां बना रहने दिया, तो भविष्य में संकट सीटों की कमी का नहीं, बल्कि भरोसे की कमी का होगा। सच्चा समाधान सीटों की संख्या बढ़ाने में नहीं, बल्कि सीटों को गुणवत्ता/योग्यता से भरने में है।

—**प्रो. अशोक कुमार, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर**